अमृतवाणी संदेश

मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक-0

दोहा

"संत न होते जगत में, जल मरता संसार।
जो जन #संत_वाणी गुनै, मिट जायें कष्ट हजार।।"

यदि इस संसार में संत, महापुरुष, ज्ञानियों और सद्गुरुओं का अस्तित्व न होता, तो यह संसार अंधकार, भ्रम, अधर्म, क्रोध, लोभ और दुःखों में डूब जाता। जैसे बिना पानी के जीव-जगत सूखकर नष्ट हो जाता है, वैसे ही संतों के मार्गदर्शन के बिना मनुष्य का जीवन सूख जाता, उसकी सोच कठोर हो जाती और समाज में करुणा, प्रेम और सत्य का प्रकाश समाप्त हो जाता।

संतों की वाणी, उनके विचार, उनका जीवन और उनके आदर्श– सभी मनुष्य को सही दिशा देते हैं।
जो लोग संतों की **Teachings** को हृदय से स्वीकारते हैं, उन पर अमल करते हैं, उनके जीवन में से दुःख, भ्रम, कष्ट, तनाव और नकारात्मकता सब धीरे-धीरे मिटने लगती है। उनके व्यक्तित्व में शांति, संयम, संतोष और सकारात्मक ऊर्जा का प्रकाश फैलने लगता है।

✍ सादर - विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद
वाट्सअप- 9458278429

इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए,इस उद्देश्य और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अमृतवाणी संदेश शुरू किया गया है।
इस टीम का यह सद्प्रयास मानवता को अग्रसर करें और देश की प्रगति में साधक बने।
इसी भावना के साथ

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 1

दोहा:-

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥"

अर्थ:

सच्चाई के समान कोई तपस्या नहीं, और झूठ के समान कोई पाप नहीं। जिसके हृदय में सत्य बसता है, वही सच्चा हृदय वाला है। सत्य ही सर्वोच्च धर्म है, झूठ सबसे बड़ा अधर्म। बाहरी दिखावा नहीं, मन की शुद्धता ही सच्चाई है।

निहित नैतिक संदेश (बच्चों के लिए):

- *सच्चाई सबसे बड़ा तप:* बच्चो, पूजा-व्रत से ज्यादा जरूरी है सच बोलना। यह मन को मजबूत बनाता है।
- *झूठ मत बोलो:* झूठ बड़ा पाप है–यह भरोसा तोड़ता है और दुख देता है। छोटा झूठ भी न बोलो।
- *दिल से सच्चे बनो:* बाहर अच्छा दिखना आसान, लेकिन मन साफ रखो। सच्चे बच्चे को सब प्यार करते हैं।
- *सच्चाई से खुशी मिलेगी:* सच की आदत डालो, तो जीवन में शांति आएगी। भगवान सच्चे बच्चों को आशीर्वाद देते हैं!

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 2

दोहा:-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

अर्थ:

जो काम कल करना है, उसे आज करो; जो आज है, उसे अभी। क्योंकि पल भर में सब नष्ट हो सकता है, फिर कब करोगे?

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:

बच्चो, समय बहुत तेज़ भागता है, इसलिए कभी भी काम को कल पर मत टालो। होमवर्क, पढ़ाई या कोई अच्छा काम अभी शुरू कर दो, वरना बाद में पछताना पड़ेगा। याद रखो, जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं, लेकिन अगर तुम समय का सदुपयोग करोगे, तो सफलता और खुशी हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 03

दोहा:-

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिल्या कोय।
जो मन देखा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।"

अर्थ:-

बुराई ढूँढने गया तो किसी में न मिली। जब अपने मन को देखा तो मुझसे बुरा कोई न था। यानी अपनी कमियाँ पहले सुधारो।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चो, दूसरों की कमियों पर उँगली उठाने से पहले अपनी गलतियों को देखो। अगर तुम हमेशा दोस्तों या परिवार की बुराई ढूँढोगे, तो खुद की कमियाँ कभी न सुधरेंगी। रोज़ खुद से पूछो कि आज मैंने क्या अच्छा किया और क्या गलत, फिर उसे सुधारो–इससे तुम मजबूत और बेहतर इंसान बनोगे।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 04

दोहा:-

कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।।

अर्थ:-

कबीर बाजार (दुनिया) में खड़े होकर सभी की भलाई की प्रार्थना करते हैं। वे न किसी से गहरी दोस्ती रखते हैं और न ही किसी से दुश्मनी। यानी सबके प्रति समान भाव रखना।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चो, दुनिया में हर कोई अलग-अलग होता है, लेकिन तुम सबके साथ समान प्यार और सम्मान रखो। न किसी को बहुत ज्यादा अपना दोस्त बना लो कि अलगाव दुख दे, और न किसी से नाराज़ रहो कि मन खराब हो। इससे तुम्हारा जीवन शांत और खुशहाल बनेगा, और तुम अच्छे इंसान के रूप में याद रखे जाओगे।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 05

दोहा:-

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

अर्थ:-

उम्र भर माला फेरने (पूजा करने) से मन का मैल (बुरे विचार) नहीं धुला। हाथ के मनके (बाहरी कर्म) छोड़ दो, मन के मनके (अंदरूनी शुद्धि) फेरो।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों, भगवान को याद करने का मतलब सिर्फ दिखावा करना नहीं है, बल्कि दिल को साफ रखना है। अगर तुम बाहर से पूजा करोगे लेकिन अंदर से गुस्सा,लालच या झूठ रखोगे, तो वो व्यर्थ है। हमेशा अच्छे विचार रखो, दूसरों की मदद करो, और सच्चे मन से प्रार्थना करो–तब तुम्हारी जिंदगी में सच्ची शांति आएगी।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 06

दोहा:-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

अर्थ:-

किताबें पढ़-पढ़कर पूरा जगत मर गया, लेकिन कोई सच्चा पंडित न बना। प्रेम के दो अक्षर (प्र + एम) पढ़ ले तो सच्चा विद्वान हो जाए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों, किताबें पढ़ना बहुत जरूरी है, लेकिन असली ज्ञान तो प्यार करने में है। अगर तुम सिर्फ नंबर लाने के लिए पढ़ोगे, तो जीवन सूखा रहेगा, लेकिन अगर सबको माता - पिता, दोस्तों, जानवरों–को सच्चा प्यार दोगे, तो तुम सच्चे विद्वान बनोगे। प्यार से दुनिया सुंदर लगेगी और तुम्हें हर समस्या आसान लगेगी।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 07

दोहा:-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

अर्थ:-

कवि कहते हैं कि जब मेरे सामने गुरु (शिक्षक/मार्गदर्शक) और गोविंद (ईश्वर/भगवान) दोनों एक साथ खड़े हों, तो मैं पहले किसके पैर छूकर आदर प्रकट करूँ? इस दुविधा में कबीरदास जी कहते हैं कि मैं अपने गुरु पर बलिहारी (समर्पित) जाता हूँ,क्योंकि यह गुरु ही हैं जिन्होंने मुझे गोविंद (ईश्वर) तक पहुँचने का मार्ग दिखाया है और उनकी पहचान करवाई है। अत:, गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है, क्योंकि गुरु के ज्ञान के बिना ईश्वर को जानना असंभव है। यह दोहा गुरु के अत्यधिक महत्व और सर्वोच्च स्थान को दर्शाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश:-

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीखना चाहिए कि हमारे जीवन में गुरु यानी हमारे शिक्षक, माता-पिता और हर वह व्यक्ति जो हमें अच्छी बातें सिखाता है, उनका स्थान सबसे ऊँचा है। जिस प्रकार गुरु ने कबीरदास जी को भगवान का रास्ता दिखाया, उसी तरह आपके शिक्षक और बड़े आपको सफलता और अच्छे जीवन का रास्ता दिखाते हैं। इसलिए, आपको हमेशा अपने गुरुजनों और बड़ों का आदर करना चाहिए, उनका कहा मानना चाहिए और उनके दिए हुए ज्ञान को ध्यान से ग्रहण करना चाहिए। अपने शिक्षकों के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहें।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 08

दोहा:-

दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि दु:ख और विपत्ति के समय तो हर कोई ईश्वर को, या अपनी आस्था को, याद करता है और उससे सहायता की प्रार्थना करता है, लेकिन जब जीवन में सुख और आनंद होता है, तब कोई भी उस परम शक्ति का स्मरण नहीं करता। यदि मनुष्य सुख के क्षणों में भी ईश्वर को याद करे, उसका धन्यवाद करे और अपनी आस्था में बना रहे, तो उसे कभी दु:ख और कष्ट का सामना ही नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि उसकी आस्था उसे हर परिस्थिति में बल और सही राह देती रहेगी। यह दोहा हमें यह सिखाता है कि हमें सुख और दु:ख,दोनों अवस्थाओं में समान भाव से अपने आराध्य को याद करना चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीखना चाहिए कि हमें हमेशा कृतज्ञ (Thankful) रहना चाहिए। जब आपको कोई खिलौना मिलता है, या आप परीक्षा में अच्छे नंबर लाते हैं, तो आप बहुत खुश होते हैं। यह आपका सुख का समय है। इस समय हमें उन सभी लोगों को, जैसे माता - पिता, शिक्षक और भगवान को, धन्यवाद देना चाहिए जिनकी वजह से हमें यह खुशी मिली। जब आप दुखी होते हैं या डरते हैं, तब तो आप मदद के लिए दौड़ते ही हैं, लेकिन असली समझदारी यह है कि जब आप खुश हों तब भी हमेशा विनम्र रहें और सबको याद करें। हमेशा अच्छा व्यवहार करो और याद रखो कि अच्छे काम करने वाले और सबका धन्यवाद करने वाले बच्चों को जीवन में कम परेशानियाँ आती हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 09

दोहा:-

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

अर्थ:-

कबीरदास जी ईश्वर से केवल इतनी ही सांसारिक संपत्ति (धन और अन्न) की कामना करते हैं जिससे उनका परिवार आराम से जीवन व्यतीत कर सके। वे प्रार्थना करते हैं कि मुझे इतना मिले कि मैं स्वयं भी भूखा न रहूँ,और यदि कोई अतिथि या जरूरतमंद (साधु) उनके द्वार पर आए, तो वह भी भूखा न जाए। यह दोहा लालच से दूर रहने, जीवन में संतोष रखने और अपनी आवश्यकताएं पूरी होने के बाद दूसरों की सहायता करने के उच्च आदर्श को प्रस्तुत करता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों के लिए संदेश यह है कि हमें कभी भी अधिक लालच नहीं करना चाहिए। हमें केवल उतना ही माँगना या प्राप्त करना चाहिए, जिससे हमारा काम चल जाए और हम खुश रह सकें (संतोष)। साथ ही, जब भी हमारे पास कोई चीज़ अधिक हो (जैसे खाने की चीज़ें, स्टेशनरी, या खिलौने),व तो हमें उसे अपने दोस्तों और जरूरतमंदों के साथ बाँटना चाहिए। हमेशा याद रखें, बाँटने से खुशी बढ़ती है!

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 10

दोहा:-

चिंता ऐसी डाकिनी, काट कलेजा खाय।
वैद्य बेचारा क्या करे, कहाँ तक दवा लगाय।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि चिंता (अत्यधिक फिक्र या तनाव) एक ऐसी चुड़ैल (डाकिनी) के समान है जो व्यक्ति के हृदय (कलेजा) को अंदर ही अंदर काटती रहती है और धीरे-धीरे उसे नष्ट कर देती है। यह मानसिक पीड़ा इतनी गहरी और आत्म-जनित होती है कि इसके सामने बेचारा वैद्य या डॉक्टर भी असहाय हो जाता है। कोई भी बाहरी दवा या उपचार इस आंतरिक दुख को पूरी तरह से ठीक नहीं कर सकता, क्योंकि यह रोग शरीर का नहीं, बल्कि मन का है। यह दोहा बताता है कि चिंता शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है और मन की शांति भंग करती है, जिसे केवल आंतरिक समझ और मन को शांत करके ही दूर किया जा सकता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें छोटी-छोटी बातों की बहुत ज़्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए। चिंता करना एक बुरी आदत है जो आपको अंदर से कमज़ोर बना सकती है, ठीक वैसे ही जैसे एक डाकिनी कलेजे को काटती है। अगर कभी कोई समस्या आए,तो डरने या घबराने के बजाय, अपने माता-पिता, शिक्षकों, या बड़ों से बात करनी चाहिए। हमेशा याद रखो कि समस्या को हल करने के लिए प्रयास करना ज़रूरी है, न कि उसकी चिंता करते रहना। खुश रहो, खेलो, पढ़ो, और अपने मन को शांत व मज़बूत बनाकर आगे बढ़ो।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 11

दोहा:-

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजियो ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

अर्थ:-

यह दोहा हमें सिखाता है कि किसी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति या बाहरी दिखावे से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, गुणों और सक्षमता से करनी चाहिए। जिस प्रकार एक साधु या ज्ञानी व्यक्ति का महत्व उसकी जाति में नहीं होता, बल्कि उसके द्वारा दिए गए ज्ञान और शिक्षा में होता है, ठीक उसी तरह हमें किसी वस्तु के बाहरी आवरण (म्यान) को महत्व न देते हुए उसकी आंतरिक उपयोगिता (तलवार) को महत्व देना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें लोगों के सार (Essence) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, न कि उनके रूप (Appearance) या सामाजिक दर्जे पर।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों! इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने दोस्तों या किसी भी व्यक्ति को चुनते समय उनकी जाति, धर्म, अमीरी या गरीबी को नहीं देखना चाहिए। इसके बजाय, हमें यह देखना चाहिए कि उनमें कितना अच्छा ज्ञान है और उनके अच्छे गुण क्या हैं। आप हमेशा ऐसे लोगों से दोस्ती करें जो आपको अच्छी बातें सिखाते हैं और अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे तलवार की धार काम आती है, न कि उसकी म्यान; वैसे ही आपकी बुद्धिमानी और अच्छे व्यवहार ही सबसे ज़्यादा ज़रूरी हैं, न कि आपके कपड़े या आप किस परिवार से हैं। ज्ञान और अच्छा व्यवहार ही सच्चा धन है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 12

दोहा:-

जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है, जहाँ क्षमा तहाँ आप ॥

अर्थ:-

कबीर दास जी इस दोहे में बताते हैं कि हमारे मानवीय गुणों का सीधा संबंध धर्म और अधर्म (पाप) से है। दया (करुणा) ही सच्चे धर्म का आधार है, जहाँ दया है, वहीं सही आचरण और कर्तव्य है। इसके विपरीत, जहाँ लोभ (लालच) और क्रोध (गुस्सा) जैसे अवगुण होते हैं, वहाँ निश्चित रूप से पाप का वास होता है, जो हमें गलत रास्ते पर ले जाता है। अंत में, कबीर दास जी कहते हैं कि जहाँ क्षमा (माफ़ करने की भावना) होती है, वहाँ स्वयं ईश्वर या आत्मा (आप) का वास होता है। इस प्रकार, मनुष्य को दया और क्षमा जैसे गुणों को अपनाना चाहिए और लोभ तथा क्रोध से दूर रहना चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों को हमेशा दयालु और मददगार होना चाहिए, क्योंकि दया ही सबसे बड़ा धर्म है। उन्हें लालच करने और गुस्सा करने से बचना चाहिए, क्योंकि ये दोनों आदतें हमें गलत काम (पाप) की ओर ले जाती हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि जब कोई गलती करे, तो उसे माफ़ करना सीखो, क्योंकि क्षमा करने की भावना सबसे अच्छी होती है और इससे हमें आंतरिक खुशी और शांति मिलती है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 13

दोहा:-

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि सिर्फ़ बड़ा होना या धनवान होना ही पर्याप्त नहीं है यदि वह बड़प्पन या धन किसी के काम न आ सके। जिस प्रकार खजूर का पेड़ बहुत बड़ा होता है, पर उसकी ऊँचाई के कारण न तो राहगीर को ठंडी छाया मिल पाती है और न ही उसके फल आसानी से तोड़े जा सकते हैं, ठीक उसी प्रकार समाज में वह व्यक्ति निरर्थक है जो पद, शक्ति या धन में तो बहुत बड़ा है, लेकिन जिससे किसी गरीब या ज़रूरतमंद को कोई लाभ या सहायता नहीं मिलती। उपयोगिता ही बड़प्पन का सच्चा माप है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा दयालु और मददगार बनना चाहिए। अगर आप पढ़ाई में बहुत अच्छे हैं, या आपके पास बहुत सारे खिलौने हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप घमंडी बन जाएं और किसी की मदद न करें। हमेशा अपने ज्ञान, अपनी चीज़ों, और अपनी अच्छाई को दूसरों के साथ बाँटना सीखें। अपने छोटे भाई-बहनों को पढ़ाएं, दोस्तों की मदद करें, और अपने से कमज़ोर लोगों के प्रति विनम्र रहें। याद रखें, सच्ची महानता दिखावे में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने में है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 14

दोहा:-

धीरे - धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

अर्थ:-

कबीरदास जी इस दोहे के माध्यम से धैर्य और सही समय के महत्व को समझाते हैं। वह कहते हैं कि हे मन, हर काम धीरे-धीरे और अपने समय पर ही होता है। जिस प्रकार माली एक पौधे को चाहे सौ घड़े पानी से सींचे, लेकिन फल तभी लगेगा जब उसकी उचित ऋतु (मौसम) आएगी। इसका अर्थ है कि केवल प्रयास करना ही पर्याप्त नहीं है; किसी भी कार्य की सफलता के लिए सही समय और निरंतरता के साथ-साथ परिणाम के लिए धीरज रखना भी अत्यंत आवश्यक है। हमें हड़बड़ी नहीं करनी चाहिए और यह समझना चाहिए कि हर वस्तु या लक्ष्य की प्राप्ति का अपना एक निर्धारित समय होता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने काम में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। अगर आप कोई भी काम कर रहे हैं, जैसे पढ़ाई, चित्रकारी, या कोई नया खेल सीखना, तो आपको मेहनत करनी है, लेकिन धैर्य भी रखना है। आप एक दिन में सब कुछ नहीं सीख सकते। जैसे पौधा तुरंत बड़ा होकर फल नहीं देता, वैसे ही आपकी मेहनत का फल भी सही समय आने पर ही मिलेगा। इसलिए, लगातार प्रयास करते रहो, धैर्य रखो, और सफलता ज़रूर मिलेगी।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 15

दोहा:-

बानी से पहचानिए, साम चोर की घात।
अंदर की करनी से सब, निकले मुँह कई बात।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि किसी व्यक्ति के मन में क्या छिपा है–चाहे वह छल-कपट हो या सच्चाई–वह उसकी बातों से और विशेष रूप से उसके कार्यों से स्पष्ट हो जाता है। जैसे "साम चोर की घात" (चोर घात लगाकर बैठा हो), वैसे ही कपटी व्यक्ति के मन की काली नियत उसकी मीठी या चतुराई भरी बातों से पहचानी जा सकती है। इसी प्रकार, कोई व्यक्ति जो भीतर से अच्छा है, उसके विचार और सद्भावना उसके व्यवहार और मुंह से निकली बातों में झलक जाती है। यह दोहा बताता है कि मुंह से निकली हर बात और किए गए हर काम से व्यक्ति का असली स्वभाव दुनिया के सामने आ जाता है, जिसे छिपाना नामुमकिन है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा सच बोलना चाहिए और अच्छे काम करने चाहिए। जिस तरह हम किसी किताब को पढ़कर उसके अंदर की कहानी जान लेते हैं, उसी तरह लोग हमारी बातों (वाणी) और हमारे कामों (करनी) को देखकर जान जाते हैं कि हम अंदर से कैसे इंसान हैं। अगर हम हमेशा झूठ बोलेंगे या गलत काम करेंगे, तो हमारी असलियत सबके सामने आ जाएगी, भले ही हम खुद को अच्छा दिखाने की कितनी भी कोशिश करें। इसलिए, याद रखो: ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है! हमेशा मीठा बोलो, किसी को धोखा मत दो, और ऐसे काम करो जिससे तुम्हारे माता-पिता और दोस्त तुम पर गर्व कर सकें।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 16

दोहा:-

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि जो व्यक्ति आपकी निंदा करता है या आपकी कमियाँ बताता है, उसे हमेशा अपने पास रखना चाहिए, हो सके तो अपने आँगन में ही उसे रहने की जगह दे देनी चाहिए। इसका कारण यह है कि निंदक व्यक्ति एक सुधारक की भूमिका निभाता है। जब वह आपकी बुराइयाँ या कमियाँ सबके सामने रखता है, तो आपको आत्म - चिंतन का मौका मिलता है। इस प्रकार, निंदक बिना किसी पानी या साबुन का उपयोग किए ही, यानी बिना किसी खर्च या प्रयास के, आपके स्वभाव और चरित्र को स्वच्छ और पवित्र बना देता है, क्योंकि उसके डर या उसकी बातों से आप अपनी गलतियों को सुधारने का प्रयास करते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपनी आलोचना या बुराई करने वालों से गुस्सा नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें अपना दोस्त बनाना चाहिए। जब कोई आपको बताता है कि आपने क्या गलत किया है, तो वह आपको अपनी गलती सुधारने का मौका दे रहा होता है। यह ठीक वैसे ही है जैसे कोई आईना आपको दिखाता है कि आपके चेहरे पर धूल लगी है। अगर आप उस व्यक्ति की बात सुनेंगे और अपनी कमी को ठीक कर लेंगे, तो आप और भी बेहतर इंसान बन जाएँगे। इसलिए, कभी भी डांट या आलोचना से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उससे सीखकर आगे बढ़ना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 17

दोहा:-

फूटी आँख विवेक की, लखे ना संत असंत।
जाके संग दस-बीस हैं, ताको नाम महंत ।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि आजकल लोगों की विवेक रूपी आँख फूटी हुई है, यानी उनमें सही और गलत, संत और असंत (दुर्जन/पाखंडी) में भेद करने की समझ नहीं है। जिसके साथ दस-बीस लोग यानी अनुयायियों या शिष्यों का समूह चलता है, उसी को लोग बड़ा संत या 'महंत' मान लेते हैं, भले ही उसमें कोई वास्तविक ज्ञान या सद्गुण न हो। कवि यह बताना चाहते हैं कि किसी व्यक्ति की महानता उसके अनुयायियों की संख्या से नहीं, बल्कि उसके चरित्र, ज्ञान और सत्यनिष्ठा से मापी जानी चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अपनी बुद्धि (विवेक) का इस्तेमाल करना चाहिए और किसी की देखा-देखी नहीं करनी चाहिए। यह ज़रूरी नहीं है कि जिस व्यक्ति के पीछे बहुत सारे लोग हों, वह हमेशा सही ही हो। आपको किसी की बातों पर आँख बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए। किसी को महान मानने से पहले यह देखना चाहिए कि क्या वह व्यक्ति सच बोलता है, दूसरों की मदद करता है, और अच्छे काम करता है। हमेशा सच्चाई और अच्छाई को महत्व दो, न कि भीड़ या दिखावे को।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 18

दोहा:-

तेरा साईं तुझमें , ज्यों पहुपन में बास।
कस्तूरी का हिरण ज्यों ,फिर-फिर ढूँढ़त घास।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार फूल के भीतर उसकी सुगंध (बास) अंतर्निहित होती है, और जिस प्रकार कस्तूरी मृग की नाभि में ही कस्तूरी मौजूद होती है, फिर भी वह उस सुगंध के स्रोत को न पहचान कर, उसे बाहर जंगल की घास में ढूँढता फिरता है ठीक उसी प्रकार, ईश्वर (साईं) या सत्य हमारे भीतर ही निवास करता है। मनुष्य इस आंतरिक सत्य को अनदेखा करके, उसे बाहर मंदिर, मस्जिद, तीर्थों और अन्य भौतिक स्थानों पर व्यर्थ ही खोजता फिरता है। यह दोहा हमें सिखाता है कि आत्मा ही परमात्मा का अंश है,और ईश्वर को जानने के लिए बाहर भटकने की बजाय, अपने अंदर झाँकना और आत्म-साधना करना आवश्यक है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह नैतिक संदेश मिलता है कि हमारी सबसे बड़ी शक्ति, योग्यता और खुशियाँ हमारे अंदर ही छिपी हैं। जैसे कस्तूरी हिरण अपनी ही खुशबू को बाहर ढूँढता है, वैसे ही हम अक्सर दूसरों की नक़ल करते हैं या सोचते हैं कि सफलता किसी और चीज या जगह से आएगी। आपको हमेशा यह याद रखना चाहिए कि आप विशेष हैं। आपके अंदर ही अच्छाई, बुद्धि, और क्षमता का भंडार है। इसलिए, दूसरों से तुलना करने की बजाय, अपने हुनर को पहचानो, अपनी क्षमताओं पर विश्वास करो और उन्हें मेहनत से निखारो। अपनी पहचान बाहर नहीं, बल्कि अपने दिल और दिमाग के भीतर ढूँढो।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 19

दोहा:-

जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाय।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाय।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि आध्यात्मिक प्रेम की राह अत्यंत संकरी (तंग) होती है, जिस पर एक साथ 'मैं' (अहंकार) और 'गुरु' (ईश्वर या ज्ञान) दोनों नहीं चल सकते। जब तक व्यक्ति के भीतर 'मैं' यानी अहंकार का भाव प्रबल था, तब तक उसे सच्चे गुरु या वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। और अब, जब उसे सच्चे गुरु की प्राप्ति हुई है या वह ज्ञान मार्ग पर चल पड़ा है, तो उसके भीतर का अहंकार (मैं) समाप्त हो गया है। कबीरदास जी यहाँ समझाते हैं कि ईश्वर के प्रेम या ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपने अहंकार और स्वार्थ को मिटाना आवश्यक है, क्योंकि ये दोनों भावनाएँ एक-दूसरे की विरोधी हैं और एक ही हृदय में साथ नहीं रह सकतीं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों! इस दोहे का नैतिक संदेश यह है कि आपको अपने जीवन में हमेशा विनम्र और सीखने के लिए उत्सुक रहना चाहिए। कक्षा में या खेलते समय, अगर हम यह सोचने लगें कि 'मैं ही सबसे अच्छा/अच्छी हूँ' या 'मुझे सब कुछ आता है', तो हम नई चीजें सीखना बंद कर देते हैं। अहंकार हमें अपने शिक्षकों, माता-पिता और बड़ों से ज्ञान प्राप्त करने से रोकता है। इसलिए, बच्चों को हमेशा 'मैं' (अहंकार) को छोड़कर 'हम' की भावना रखनी चाहिए, अपने दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, और अपने शिक्षकों का आदर करते हुए उनसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 20

दोहा:-

नहीं शीतल है चंद्रमा, हिम नहीं शीतल होय।
कबीरा शीतल संत जन, नाम सनेही सोय।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि चंद्रमा की शीतलता (जिसकी उपमा अक्सर शांति और ठंडक से दी जाती है) और बर्फ/हिम की शीतलता (जो प्रकृति में सबसे ठंडी मानी जाती है) भी वास्तविक शांतिदायक और शीतल नहीं है। कबीर के अनुसार, इस संसार में यदि कोई वास्तव में शीतल और शांत है, तो वे संतजन हैं, और विशेष रूप से वे लोग जो ईश्वर के नाम से प्रेम (नाम सनेही) करते हैं। इसका अर्थ है कि सच्ची शीतलता, शांति और संतोष किसी भौतिक वस्तु या प्राकृतिक घटना में नहीं,बल्कि उन लोगों के हृदय और आचरण में निहित है जो निष्काम भाव से ईश्वर को मानते हैंऔर दूसरों के प्रति दयालुता का भाव रखते हैं। उनकी उपस्थिति मात्र से ही दूसरों को सुख और शांति मिलती है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीखना चाहिए कि सच्ची ठंडक और शांति हमारे मन के अच्छे व्यवहार में होती है। जैसे गर्म मौसम में ठंडा पानी सुकून देता है, वैसे ही अच्छे और शांत स्वभाव वाले लोग हमें खुशी और आराम देते हैं। हमें हमेशा कबीरदास जी के बताए गए संतों की तरह शांत रहना चाहिए, किसी पर गुस्सा नहीं करना चाहिए, और सबके साथ प्यार व दया से पेश आना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम खुद भी खुश रहते हैं और हमारे आस-पास के लोग भी। इसलिए, हमें हमेशा मीठी बातें करनी चाहिए और मदद करने वाला दोस्त बनना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 21

दोहा:-

आहार करे मन भावता, इंदी किए स्वाद।
नाक तलक पूरन भरे, तो का कहिए प्रसाद ।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि जब व्यक्ति मन को भाने वाला (स्वाद में अच्छा लगने वाला) भोजन तैयार करता है, और उसे अपनी इंद्रियों के स्वाद (जीभ के लालच) के लिए खाता है, तो वह केवल अपनी वासनाओं की पूर्ति कर रहा होता है। यदि भोजन को केवल स्वाद के लिए इतना भर लिया जाए कि वह नाक तक (अर्थात् पेट पूरी तरह से भरकर, गले तक) भर जाए, तो ऐसे पेटू भोजन को, जो केवल इन्द्रिय सुख के लिए किया गया है, प्रसाद (ईश्वर का भोग या कृपा) कैसे कहा जा सकता है? कबीर का आशय है कि भोजन तभी 'प्रसाद' बनता है जब वह सात्विक हो, सीमित मात्रा में हो, और उसे ईश्वर को समर्पित करके विनम्रता से ग्रहण किया जाए, न कि केवल स्वाद की लालसा में भरकर खाया जाए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें खाने की चीजों को लेकर लालची नहीं होना चाहिए। हमें केवल उतना ही भोजन खाना चाहिए जिससे हमारा पेट भर जाए और शरीर को ताकत मिले, न कि इतना कि पेट दुखने लगे। स्वाद के पीछे भागना अच्छी आदत नहीं है। हमें यह समझना चाहिए कि जो भोजन हमें मिलता है, वह एक तरह से ईश्वर का दिया हुआ आशीर्वाद (प्रसाद) है। इसलिए हमें खाने का सम्मान करना चाहिए, खाना बर्बाद नहीं करना चाहिए, और जरूरत से ज्यादा खाने की आदत से बचना चाहिए। हमेशा संतुलित आहार लो और खाना खाते समय मन को शांत रखो।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 22

दोहा:-

छीर रूप सतनाम है, नीर रूप व्यवहार।
हंस रूप कोई साधु है, सत का छाननहार।।

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि इस संसार में सत्य (परमात्मा) दूध के समान है और सांसारिक व्यवहार या माया पानी के समान है। जैसे दूध और पानी को मिला देने पर उन्हें अलग करना कठिन होता है, वैसे ही इस दुनिया में सच और झूठ, अच्छाई और बुराई आपस में मिले हुए हैं। केवल वही व्यक्ति सच्चा 'साधु' या सज्जन है, जो 'हंस' की तरह विवेकशील है। जिस प्रकार हंस अपनी चोंच से दूध और पानी के मिश्रण में से केवल दूध को ग्रहण कर लेता है और पानी को छोड़ देता है, वैसे ही एक बुद्धिमान व्यक्ति संसार की बुराइयों और व्यर्थ की बातों को छोड़कर केवल सत्य और अच्छाई को अपनाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अच्छाई और बुराई के बीच फर्क करना सीखना चाहिए। हमारे आसपास कई तरह के लोग और बातें होंगी, कुछ अच्छी और कुछ बुरी। एक सच्चे और अच्छे बच्चे की पहचान यह है कि वह दूसरों की बुराइयों या गलत आदतों पर ध्यान देने के बजाय, केवल उनकी अच्छी बातों को सीखे। जैसे हंस गंदगी में नहीं फंसता और केवल मोती चुनता है, वैसे ही आपको भी अपने जीवन में सच बोलना, ईमानदारी और परोपकार जैसे गुणों को चुनना चाहिए और बुरी संगति या गलत व्यवहार से दूर रहना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 23

दोहा:-

ज्यों तिल मांही तेल है,ज्यों चकमक में आग।
तेरा साईं तुझमें, बस जाग सके तो जाग।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार तिल के छोटे से बीज के अंदर तेल छिपा होता है (जो ऊपर से दिखाई नहीं देता) और चकमक पत्थर के भीतर आग समाई रहती है (जो रगड़ने पर ही प्रकट होती है), ठीक उसी प्रकार परमात्मा (ईश्वर या सत्य) भी हर मनुष्य के हृदय के भीतर ही निवास करता है। वह कहीं बाहर मंदिर, मस्जिद या अन्य स्थानों पर नहीं, बल्कि हमारे अपने भीतर ही है। कमी केवल हमारी जागरूकता की है। कबीर कहते हैं कि यदि तुम अपने अज्ञान की नींद से जाग सको और अपने भीतर झाँक सको, तो तुम अपने 'साईं' यानी परमात्मा का साक्षात्कार अपने अंदर ही कर लोगे।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह बड़ी सीख मिलती है कि असली शक्ति और अच्छाई हमारे अपने भीतर होती है। अक्सर हम सोचते हैं कि हम कमज़ोर हैं या हमें दूसरों की मदद की ज़रूरत है, लेकिन जैसे तिल में तेल और पत्थर में आग छिपी होती है, वैसे ही आप सबके अंदर साहस, बुद्धि और दया जैसे महान गुण मौजूद हैं। आपको बस अपनी मेहनत और अच्छी सोच से उन्हें बाहर निकालना है। यह दोहा हमें यह भी सिखाता है कि हमें खुद पर विश्वास रखना चाहिए और दूसरों में बुराई ढूँढने के बजाय अपने मन को साफ़ और जागृत रखना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 24

दोहा:-

दया कौन पर कीजिए,का पर निर्दय होय।
साईं के सब जीव है,कीरी कुंजर दोय।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी मानवता और करुणा का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं कि हम किस पर दया करें और किसके प्रति निर्दयी बनें? सत्य तो यह है कि संसार के सभी जीव उस एक ही ईश्वर (साईं) की संतान हैं। चाहे वह छोटी सी 'कीरी' (चींटी) हो या विशालकाय 'कुंजर' (हाथी), सबके भीतर एक ही प्राण-तत्त्व और एक ही परमात्मा का वास है। इसलिए, जब सभी जीव एक ही ईश्वर के बनाए हुए हैं, तो हमें किसी भी प्राणी के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए और न ही किसी को छोटा समझकर उसे कष्ट पहुँचाना चाहिए।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें 'जीव मात्र के प्रति प्रेम' की शिक्षा मिलती है। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि कोई छोटा जानवर या निर्बल व्यक्ति दया का पात्र नहीं है। जैसे एक चींटी को भी उतना ही दर्द होता है जितना एक बड़े हाथी को, वैसे ही हर जीवित प्राणी में जीवन होता है। हमें सभी के प्रति दयालु होना चाहिए और किसी को भी बेवजह परेशान नहीं करना चाहिए। यह दोहा हमें सिखाता है कि हम सबको बराबर समझें और प्रकृति के हर जीव का सम्मान करें, क्योंकि सब उसी ईश्वर की बनाई हुई सुंदर रचनाएँ हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 25

दोहा:-

जहाँ काम तहाँ नाम नहिं,जहाँ नाम नहिं वहाँ काम।
दोनों कबहूँ नहिं मिले, रवि रजनी इक धाम ।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि जहाँ 'काम' (सांसारिक वासनाएँ, इच्छाएँ और अहंकार) होता है, वहाँ परमात्मा का सच्चा 'नाम' (प्रेम और भक्ति) निवास नहीं कर सकता। और जहाँ परमात्मा का सच्चा वास होता है, वहाँ सांसारिक वासनाएँ और अहंकार खुद-ब-खुद समाप्त हो जाते हैं। ये दोनों एक साथ कभी नहीं रह सकते, ठीक उसी प्रकार जैसे 'रवि' (सूर्य) और 'रजनी' (रात) एक ही स्थान पर एक साथ नहीं रह सकते। जब सूरज निकलता है तो अंधेरा मिट जाता है, और जब रात होती है तो सूरज दिखाई नहीं देता।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने मन में अच्छे विचारों और अहंकार के बीच चुनाव करना होता है। यदि हमारे मन में घमंड, लालच या दूसरों के प्रति बुराई (काम) होगी, तो हम कभी भी शांति और ईश्वर की कृपा (नाम) नहीं पा सकेंगे। एक अच्छा इंसान बनने के लिए ज़रूरी है कि हम अपने मन से 'मैं' की भावना और बुराइयों को निकालें। याद रखें, आप एक ही समय में घमंडी और दयालु नहीं हो सकते। इसलिए सूरज की तरह अपने अंदर अच्छाई का प्रकाश लाएं ताकि बुराई का अंधेरा अपने आप दूर हो जाए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 26

दोहा:-

कबीरा धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूट एक के कारने, स्वान घरै घर जाय।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि हाथी के भीतर बहुत धैर्य होता है, वह अपनी चाल में मस्त रहता है और शांति से अपना 'मन भर' भोजन (ढेर सारा भोजन) प्राप्त करता है। उसे कभी खाने की कमी नहीं होती क्योंकि वह शांत स्वभाव का है। इसके विपरीत, कुत्ता (स्वान) बहुत चंचल और अधीर होता है। वह ज़रा सी रोटी के एक टुकड़े के लालच में इधर-उधर भागता है और दर - दर की ठोकरें खाता है। कबीर समझाते हैं कि जो व्यक्ति धैर्य रखता है उसे सब कुछ मिलता है, लेकिन जो व्यक्ति लालच में आकर जल्दबाजी करता है, उसे केवल परेशानी और अपमान ही हाथ लगता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें 'धैर्य और संतोष' की सबसे बड़ी सीख मिलती है। जीवन में कभी भी किसी चीज़ के लिए बहुत ज़्यादा जल्दबाजी या दूसरों की चीज़ों को देखकर लालच नहीं करना चाहिए। हाथी की तरह शांत और धीरज रखने वाले बच्चे अपनी मेहनत से सफलता और सम्मान दोनों पाते हैं। वहीं, जो बच्चे छोटी-छोटी बातों पर अधीर हो जाते हैं या लालच में दूसरों का हिस्सा छीनने की कोशिश करते हैं, उन्हें अंत में कुत्ता बनने (दर-दर भटकने) जैसी स्थिति का सामना करना पड़ता है। हमेशा याद रखें कि धैर्य का फल मीठा होता है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 27

दोहा:-

ऊँचे पानी न टिके, नीचे ही ठहराय।
नीचा हो सो भरिए पिए,ऊँचा प्यासा जाय।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि पानी कभी भी ऊँचे स्थानों या पहाड़ों पर नहीं टिकता, वह हमेशा नीचे की ओर बहकर गहराई में ही ठहरता है। ठीक इसी प्रकार, जो व्यक्ति अहंकारवश खुद को दूसरों से ऊँचा और श्रेष्ठ समझता है, वह ज्ञान और प्रेम के अमृत से वंचित रह जाता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति स्वभाव से विनम्र (नीचा) होता है, वह ज्ञान रूपी जल से पूरी तरह भर जाता है और तृप्त हो जाता है। अभिमानी व्यक्ति उस ऊँचे टीले की तरह है जो प्यासा ही रह जाता है, जबकि विनम्र व्यक्ति उस गहराई की तरह है जो सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि विनम्रता ही सबसे बड़ा गुण है। जिस तरह एक फल से लदा हुआ पेड़ हमेशा नीचे की ओर झुका रहता है, उसी तरह हमें भी चाहे कितनी भी सफलता या ज्ञान मिल जाए, हमेशा सरल और विनम्र बने रहना चाहिए। यदि हम घमंड करेंगे और खुद को सबसे बड़ा समझेंगे, तो हम नई बातें सीखने और दूसरों का प्यार पाने का अवसर खो देंगे। हमेशा याद रखें कि झुकने वाला व्यक्ति ही जीवन के असली सुख और ज्ञान को प्राप्त कर पाता है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 28

दोहा:-

बलिहारी गुरु आपणैं, द्यौं हाड़ी कै वार।
जिनि मानिप तैं देवता, करत न लागी वार॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी गुरु की महिमा का गुणगान करते हुए कहते हैं कि मैं अपने उन सद्गुरु पर न्योछावर हूँ और अपने इस शरीर (हाड़ - मांस के पुतले) को दिन में अनेक बार उन्हें समर्पित करने की इच्छा रखता हूँ। इसका कारण यह है कि गुरु ने ही अपनी शिक्षा और कृपा से मुझ जैसे साधारण मनुष्य को देवता समान बनाने में तनिक भी विलंब (देर) नहीं की।यहाँ 'देवता' बनने का अर्थ है मनुष्य के भीतर के विकारों को दूर कर उसे ज्ञान, प्रेम और पवित्रता के गुणों से भर देना। कबीर जी के अनुसार,एक सच्चा गुरु ही शिष्य के जीवन में इतना बड़ा परिवर्तन ला सकता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे शिक्षक और गुरु हमारे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शक होते हैं। जैसे एक मूर्तिकार पत्थर को तराशकर सुंदर मूर्ति बना देता है, वैसे ही शिक्षक हमें ज्ञान देकर एक बेहतर इंसान बनाते हैं। हमें हमेशा अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए और उनकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए। याद रखें, अच्छी शिक्षा और अनुशासन ही हमें सामान्य से महान बनाने की शक्ति रखते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 29

दोहा:-

सतगुरु सवाँन को सगा, सोधी सई न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति॥

अर्थ:-

इस दोहे में संत कबीरदास जी कहते हैं कि संसार में सतगुरु (सच्चे गुरु) के समान कोई दूसरा सगा-संबंधी या हितैषी नहीं है, क्योंकि वे हमें अज्ञानता से बाहर निकालते हैं। गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान के मार्ग की खोज (सोधी) के समान और कोई बड़ी दाति यानी दान या उदारता नहीं है। इसी प्रकार, परमात्मा (हरि) के समान कोई दूसरा निस्वार्थ प्रेम करने वाला मित्र नहीं है और हरिजन (ईश्वर के भक्त या सज्जन पुरुष) के समान कोई श्रेष्ठ जाति या संगति नहीं है। कबीर जी का मानना है कि जीवन में गुरु, ईश्वर और सत्संगति ही सबसे अनमोल हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने जीवन में गुरुओं और शिक्षकों का हमेशा सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे ही हमें सही रास्ता दिखाकर हमारा भविष्य संवारते हैं। साथ ही, हमें हमेशा अच्छे और सच्चे लोगों की संगति में रहना चाहिए। जिस प्रकार ईश्वर सबका भला चाहते हैं, हमें भी बिना किसी भेदभाव के दूसरों की मदद करनी चाहिए और अपने स्वभाव में विनम्रता रखनी चाहिए। अच्छी संगति और सही मार्गदर्शन ही हमें एक महान इंसान बनाते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 30

दोहा:-

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत उपकार।
लोचन अनँत उघाड़िया अनँत दिखावणहार॥

अर्थ:-

इस दोहे में संत कबीरदास जी कहते हैं कि सद्गुरु की महिमा अपार है और उनके द्वारा किए गए उपकार भी अनंत हैं। गुरु ने शिष्य की अज्ञानता को दूर कर उसकी 'अनंत दृष्टि' (ज्ञान के चक्षु) खोल दी है। जब मनुष्य की आँखों से भ्रम और अज्ञान का परदा हट जाता है, तभी वह उस अनंत परमात्मा के दर्शन करने में सक्षम हो पाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे जीवन में गुरु (शिक्षक) और बड़ों का स्थान सबसे ऊंचा होता है। जिस प्रकार एक दीपक अंधेरे को दूर कर देता है,उसी प्रकार हमारे शिक्षक हमें अच्छी शिक्षा देकर हमारे मन से अज्ञान और बुराइयों को दूर करते हैं। वे हमें सही और गलत के बीच का अंतर समझाते हैं और हमें एक बेहतर इंसान बनने में मदद करते हैं। इसलिए, हमें हमेशा अपने शिक्षकों और मार्गदर्शकों का सम्मान करना चाहिए और उनके बताए गए नेक रास्तों पर चलना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 31

दोहा:-

राम नाम कै पटंतरै देबै कौं कुछ नाँहि।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौस रही मन माँहि॥

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु ने मुझे 'राम नाम' (ईश्वर भक्ति) का जो अनमोल मंत्र दिया है, उसके बदले में उन्हें गुरुदक्षिणा के रूप में देने के लिए मेरे पास संसार में कुछ भी समतुल्य नहीं है। गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान इतना बहुमूल्य है कि दुनिया की कोई भी भौतिक वस्तु उसकी बराबरी नहीं कर सकती। कबीर के मन में यह मलाल या अभिलाषा ही रह जाती है कि मैं ऐसा क्या दूँ जिससे गुरु को पूर्णतः संतुष्ट कर सकूँ, क्योंकि गुरु के उपकार के सामने हर वस्तु तुच्छ है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमारे जीवन में गुरु और शिक्षकों का स्थान सबसे ऊँचा होता है। शिक्षक हमें जो ज्ञान और संस्कार देते हैं, वह धन-दौलत से कहीं अधिक कीमती होता है। हमें सदैव अपने गुरुओं के प्रति कृतज्ञ (आभारी) रहना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए। असली गुरुदक्षिणा महँगे उपहार देना नहीं, बल्कि उनके द्वारा सिखाए गए मार्ग पर चलना और एक अच्छा इंसान बनना है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 32

दोहा:-

सतगुरु के सदकै करूँ दिल अपणीं का साछ।
कलियुग हम स्यूँ लड़ि पड़या मुहकम मेरा बाछ॥

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि मैं अपने सद्गुरु (सच्चे गुरु) पर अपना हृदय न्योछावर करता हूँ और उनके प्रति पूरी तरह समर्पित हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे सत्य का मार्ग दिखाया है। गुरु की दी हुई शिक्षा और ज्ञान के कारण ही मेरा मन और संकल्प इतना मजबूत हो गया है कि आज यह कठिन कलियुग (बुराइयों का समय) भी मुझसे लड़ने आ गया है, यानी मुझे डराने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पा रहा है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों! इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन में एक अच्छे गुरु या शिक्षक का होना बहुत जरूरी है। जब हम अपने बड़ों और शिक्षकों की दी हुई अच्छी शिक्षाओं को अपने मन में बसा लेते हैं, तो हमारा आत्मबल बढ़ जाता है। यह मानसिक मजबूती हमें गलत रास्तों पर जाने से रोकती है और कठिन से कठिन समय में भी सही निर्णय लेने की शक्ति देती है। यदि हमारा चरित्र और इरादा नेक है, तो दुनिया की कोई भी बुराई हमें हरा नहीं सकती।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 33

दोहा:-

सतगुरु लई कमांण करि, बांहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ, भीतरि रह्या शरीर॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सद्गुरु ने ज्ञान रूपी धनुष हाथ में लेकर मुझ पर उपदेशों के तीर चलाने शुरू किए हैं। गुरु ने जब प्रेम और वात्सल्य से भरकर ज्ञान का एक ऐसा तीर (शब्द) चलाया, जो सीधे मेरे हृदय के पार हो गया। यह तीर शरीर के भीतर ही रह गया, जिसका अर्थ है कि गुरु की वह शिक्षा मेरे मन में गहराई तक उतर गई है। इससे मेरा अज्ञान नष्ट हो गया और मेरे भीतर ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति जागृत हो गई है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे जीवन में गुरु (शिक्षक) और बड़ों की बातों का बहुत महत्व होता है। जब वे हमें कोई सीख देते हैं या हमें डाँटते भी हैं, तो उसके पीछे उनका उद्देश्य हमें सही रास्ता दिखाना और हमारा भला करना होता है। हमें उनकी शिक्षाओं को केवल कान से सुनना ही नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें अपने मन में उतारना चाहिए और अपने व्यवहार में बदलाव लाना चाहिए। अच्छी बातें जब हमारे दिल में उतर जाती हैं, तभी वे हमें एक बेहतर इंसान बनाती हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 34

दोहा:-

सतगुरु साँचा सूरिवाँ, सबद जु बाह्या एक।
लागत ही मैं मिल गया, पड्या कलेजै छेक॥

अर्थ:-

संत कबीरदास जी कहते हैं कि सच्चे गुरु एक महान योद्धा के समान होते हैं। जिस प्रकार एक कुशल योद्धा अचूक निशाना लगाता है, उसी प्रकार गुरु ने ज्ञान के 'शब्द' (उपदेश) का एक ऐसा तीर चलाया कि वह सीधे मेरे हृदय के पार हो गया। उस एक शब्द के प्रभाव से मेरे भीतर का सारा अहंकार और अज्ञान समाप्त हो गया और मेरा मन परमात्मा के प्रेम में पूरी तरह लीन हो गया। गुरु के ज्ञान ने मुझे स्वयं से साक्षात्कार करा दिया।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे जीवन में गुरु या शिक्षक का मार्गदर्शन सबसे महत्वपूर्ण है। एक अच्छा शिक्षक हमें केवल अक्षर ज्ञान नहीं देता, बल्कि सही और गलत का अंतर समझाकर हमारे चरित्र का निर्माण करता है। बच्चों को हमेशा अपने बड़ों और शिक्षकों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए, क्योंकि उनकी एक छोटी सी सही सीख हमारे जीवन की दिशा बदल सकती है और हमें एक बेहतर इंसान बना सकती है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 35

दोहा:-

सतगुरु मारया बाण भरि धरि करिसूधी मूठि।
श्रंगि उघाडै लागिया ,गई दवा सूँ फूटि ।।

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि सतगुरु ने प्रेम और ज्ञान के बाण को पूरी शक्ति के साथ निशाने पर साधकर मुझ पर चलाया है। गुरु द्वारा छोड़ा गया यह ज्ञान रूपी बाण मेरे हृदय के भीतर (अंगों में) गहराई तक समा गया है। जिस प्रकार बाण लगने से घाव होता है, वैसे ही गुरु के ज्ञान ने मेरे भीतर के अहंकार और अज्ञानता को नष्ट कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप, मेरे भीतर ज्ञान की ऐसी ज्वाला या छटपटाहट पैदा हुई है जिसने सांसारिक मोह-माया के भ्रम को पूरी तरह जलाकर राख कर दिया है और मेरा मन अब ईश्वर भक्ति में लीन हो गया है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि 'गुरु का ज्ञान' हमारे जीवन के लिए सबसे अनमोल उपहार है। जैसे एक बाण लक्ष्य को भेदता है, वैसे ही गुरु की शिक्षा हमारे मन से बुराइयों और डर को बाहर निकाल देती है। हमें हमेशा अपने शिक्षकों और बड़ों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए, क्योंकि उनकी सीख भले ही कभी - कभी कठोर लग सकती है, लेकिन वह हमारे चरित्र को निखारने और हमें एक बेहतर इंसान बनाने का काम करती है। अनुशासन और सही मार्ग दर्शन ही सफलता की असली कुंजी है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 36

दोहा:-

हँसै न बोलै उन्मनी चंचल मेहल्या मारि।
कहै कबीर भीतरि भिद्य,सतगुरु कै हथियारि॥

अर्थ:-

कबीरदास जी कहते हैं कि जब सच्चा गुरु अपने ज्ञान रूपी शस्त्र (उपदेश) से शिष्य के हृदय को भेद देता है, तो शिष्य की बाहरी चंचलता समाप्त हो जाती है। वह न तो व्यर्थ में हँसता है और न ही निरर्थक बातें करता है, बल्कि उसकी अवस्था 'उन्मनी' (परम शांति या समाधि) जैसी हो जाती है। उसने अपने मन की चंचलता और विकारों को पूरी तरह वश में कर लिया होता है। गुरु का ज्ञान उसे भीतर तक इतना प्रभावित करता है कि वह बाहरी दुनिया के दिखावे को छोड़कर अपने अंतर्मन की गहराई में उतर जाता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि अनुशासन और एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है। हमें चंचलता छोड़कर अपने काम और पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। जिस तरह गुरु की सही सीख हमें गंभीर और समझदार बनाती है, उसी तरह हमें भी बड़ों की बातों को केवल सुनना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारना चाहिए। व्यर्थ की बातों में समय गँवाने के बजाय शांत रहकर अपने लक्ष्य पर ध्यान लगाना ही असली बुद्धिमानी है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 37

दोहा:-

गूँगा हुवा बावला, बहरा हुआ कान।
पाऊँ मैं पंगुल भया, सतगुरू मार्या बाण॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि जब सतगुरु ने अपने ज्ञान रूपी बाण से शिष्य के हृदय पर प्रहार किया, तो उसकी पूरी काया पलट गई। गुरु के ज्ञान के प्रभाव से शिष्य सांसारिक बुराइयों और व्यर्थ की बातों के लिए 'गूँगा', 'बहरा' और 'लंगड़ा' हो गया। इसका अर्थ यह है कि अब वह न तो किसी की बुराई करता है, न व्यर्थ की बातों पर कान देता है और न ही सांसारिक मोह-माया के पीछे भागता है। गुरु के इस ज्ञान ने उसे बाहरी दुनिया के शोर से काटकर भीतर की शांति और ईश्वर की भक्ति से जोड़ दिया है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा अच्छी बातें सुननी चाहिए और बुरी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जैसे एक अच्छा गुरु हमें सही रास्ता दिखाता है, वैसे ही हमें भी अनुशासन अपनाकर अपनी जुबान से केवल मीठे और सच्चे बोल बोलने चाहिए। हमें दूसरों की बुराई करने या सुनने से बचना चाहिए और अपने कदमों को केवल नेक काम और तरक्की की राह पर बढ़ाना चाहिए। सच्चा ज्ञान वही है जो हमें एक अच्छा और शांत इंसान बनाए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 38

दोहा:-

चौसठ दीवा जोइ करि, चौदह चंदा मांहि।
तिहिं घरि किसकौ चानिणौ,जिहि घरि गोविन्द नाहिं।।

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि यदि किसी घर में साक्षात 'गोविन्द' (ईश्वर या सात्विकता) का वास नहीं है, तो वहां चाहे चौसठ कलाओं के प्रतीक 64 दीपक जला दिए जाएं और चौदह विद्याओं के प्रतीक 14 चंद्रमा भी क्यों न चमक रहे हों, फिर भी उस घर में आध्यात्मिक अंधेरा ही रहेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि बाहरी ज्ञान, धन-दौलत और दुनिया भर की चमक-धमक तब तक व्यर्थ है, जब तक मनुष्य के हृदय में ईश्वर की भक्ति और मानवीय मूल्य न हों। बिना संस्कार और भक्ति के सारा बाहरी प्रकाश निष्फल है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि केवल बाहर से सुंदर दिखना या बहुत सारी सुख-सुविधाएं होना ही जीवन की सफलता नहीं है। असली उजाला हमारे अच्छे चरित्र, ईमानदारी और ईश्वर के प्रति प्रेम से आता है। यदि हमारे मन में दया और सच्चाई (गोविन्द) नहीं है, तो कितनी भी पढ़ाई या खिलौने हमें वास्तव में खुश और नेक इंसान नहीं बना सकते। इसलिए हमेशा अपने मन में अच्छे विचार रखें, तभी आपका जीवन सच्चे अर्थों में रोशन होगा।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 39

दोहा:-

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवैं पडन्त।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उतरन्त॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी ने संसार को दीपक और मनुष्य को पतंगे (कीड़े) के समान बताया है। जिस प्रकार एक पतंगा दीपक की लौ के आकर्षण में फंसकर अपनी जान गंवा देता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी इस मोह-माया भरे संसार के आकर्षणों और सुख-सुविधाओं के पीछे अंधा होकर भागता रहता है और अंत में अपना जीवन नष्ट कर लेता है। कबीर कहते हैं कि इस विनाशकारी चक्र से केवल वही व्यक्ति बच पाता है, जिसे गुरु का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो। गुरु की शिक्षा ही वह प्रकाश है जो हमें सही और गलत के बीच का अंतर समझाकर भटकने से बचाती है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हर चमकती चीज़ सच में अच्छी नहीं होती। कई बार हमें गलत आदतें या बुरी बातें बहुत आकर्षक लग सकती हैं (जैसे ज़्यादा टीवी देखना या पढ़ाई छोड़कर केवल खेलना), लेकिन उनका परिणाम बुरा हो सकता है। हमें हमेशा अपने बड़ों और शिक्षकों (गुरुओं) की बात माननी चाहिए, क्योंकि उनका ज्ञान हमें गलत रास्ते पर जाने से रोकता है और हमें जीवन में सही दिशा दिखाता है। अनुशासन और सही मार्गदर्शन ही हमें सफलता की ओर ले जाते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 40

दोहा:-

गुर गोविंद तौ एक है, दूजा यहु आकार।
आपा मेट जीवत मरै, तौ पावै करतार॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु और ईश्वर वास्तव में एक ही हैं, उनमें कोई अंतर नहीं है; जो भिन्नता हमें दिखाई देती है,वह केवल इस नश्वर शरीर और बाहरी रूप की है। मनुष्य ईश्वर को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसके भीतर 'मैं' यानी अहंकार (घमंड) जीवित है। जब इंसान अपने अहंकार को पूरी तरह मिटा देता है और जीवित रहते हुए भी सांसारिक मोह-माया से विरक्त (एक तरह से अहंकार के लिए मृत) हो जाता है, तभी उसे परमात्मा के दर्शन होते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि अहंकार और घमंड इंसान के सबसे बड़े दुश्मन हैं। यदि हम जीवन में कुछ बड़ा हासिल करना चाहते हैं या सच्चाई की राह पर चलना चाहते हैं, तो हमें अपने 'मैं' को त्याग कर विनम्र बनना चाहिए। जो व्यक्ति दूसरों की मदद करता है और सबको समान समझता है, वही ईश्वर का प्रिय होता है। हमेशा याद रखें कि विनम्रता ही वह चाबी है जिससे सफलता और सम्मान के द्वार खुलते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 41

दोहा:-

पासा पकड़या प्रेम का, सारी किया सरीर ।
सतगुर दाव घताइया, खेलै दास कबीर ॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी जीवन की तुलना शतरंज या चौपड़ के खेल से कर रहे हैं। वे कहते हैं कि मैंने ईश्वर की भक्ति में लीन होकर अपने शरीर को ही बाजी (बिसात) बना लिया है और 'प्रेम' को पासे के रूप में थाम लिया है। जब मेरे सद्गुरु ने मुझे सही 'दाँव' (ज्ञान और मार्ग) सिखाया, तब मैं इस संसार रूपी खेल को खेलने के लिए तैयार हुआ। इसका अर्थ है कि बिना अहंकार के, प्रेम और गुरु के मार्गदर्शन से ही जीवन की बाजी जीती जा सकती है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि जीवन में सफलता पाने के लिए अच्छे मार्गदर्शक (गुरु या माता-पिता) की बात मानना बहुत जरूरी है। जैसे खेल में जीतने के लिए सही तकनीक चाहिए होती है, वैसे ही जीवन में सही रास्ते पर चलने के लिए हमारे मन में सबके प्रति प्रेम और दया का होना आवश्यक है। यदि हम अनुशासन के साथ अपने बड़ों की सीख मानेंगे, तो हम किसी भी मुश्किल परिस्थिति को आसानी से पार कर लेंगे।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 42

दोहा:-

सतगुरु हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग ।
बरस्या बादल प्रेम का,भीजि गया सब अंग ॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि जब गुरु शिष्य की सेवा और निष्ठा से प्रसन्न (रीझि करि) होते हैं, तो वे ज्ञान का ऐसा उपदेश (प्रसंग) देते हैं जिससे हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम जागृत हो जाता है। वह उपदेश प्रेम की वर्षा करने वाले बादल के समान होता है, जिसमें भीगकर शिष्य का रोम-रोम आनंदित हो उठता है। सरल शब्दों में, सच्चे गुरु की कृपा से ही मनुष्य के भीतर प्रेम और भक्ति का संचार होता है,जो उसके पूरे व्यक्तित्व को शांति और पवित्रता से भर देता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों! इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे जीवन में गुरु और शिक्षकों का स्थान सबसे ऊँचा है। यदि हम अनुशासन और श्रद्धा के साथ अपने शिक्षकों से सीखते हैं, तो उनका मार्गदर्शन हमारे जीवन को खुशियों और अच्छी आदतों से भर देता है। जैसे बारिश पौधों को नया जीवन देती है, वैसे ही बड़ों और गुरुओं की अच्छी बातें हमें एक बेहतर इंसान बनाती हैं। इसलिए हमें हमेशा अपने शिक्षकों का सम्मान करना चाहिए और उनकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 43

दोहा:-

गूंगा हुवा बावला, बहरा हुआ कान।
पाऊँ मैं पंगुल भया, सतगुर मार्या बाण॥

अर्थ:-

सतगुरु के ज्ञान-रूपी वचन ने शिष्य के मन को ऐसा बदल दिया कि उसकी व्यर्थ बोलने, सुनने और भटकने की प्रवृत्ति समाप्त हो गई। वह बाहर से शांत और दुनिया को "बावला"-सा लगा, पर भीतर से विवेकवान हो गया।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, यह दोहा सिखाता है कि सच्चा गुरु हमें सही राह दिखाता है और हमारे मन की बेवजह की भाग-दौड़ शांत कर देता है। जब हम अच्छी बातों को अपनाते हैं तो झूठ, गुस्सा, लालच और दिखावे से दूर हो जाते हैं। हमें कम बोलना, ध्यान से सुनना, मेहनत से पढ़ना और दूसरों के प्रति दयालु रहना चाहिए। मोबाइल और फिजूल की बातों में समय बर्बाद न करें। माता-पिता और शिक्षकों की बात मानें। शांत मन से सोचें, सच्चाई पर चलें और ईमानदारी से काम करें। ऐसा करने वाला बच्चा अंदर से मजबूत, खुश और समझदार बनता है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 44

दोहा:-

भगति भजन हरि नांव है , दूजा दुक्ख आपार।
मनसा बाचा कर्मना , कबीर सुमिरण सार ॥

अर्थ:-

संत कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार में ईश्वर की भक्ति और उनका नाम जपना ही एकमात्र सच्चा सुख है, जो एक नाव की तरह हमें संसार रूपी सागर से पार लगाता है। इसके अलावा संसार के अन्य सभी सांसारिक सुख और मोह - माया अंततः अपार दुख का कारण बनते हैं। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपने मन (विचार), वचन (वाणी) और कर्म से पूरी शुद्धता के साथ परमात्मा का स्मरण करे,क्योंकि यही जीवन का असली तत्व और सार है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों के लिए इस दोहे का संदेश यह है कि हमें हमेशा अपनी सोच, बोल और काम में ईमानदारी रखनी चाहिए। जैसे कबीर जी ने 'मनसा, वाचा, कर्मणा' की बात की है, वैसे ही हमें भी वही सोचना चाहिए जो सही हो, वही बोलना चाहिए जो सच हो और वही करना चाहिए जिससे दूसरों का भला हो। जब हम अच्छे काम करते हैं और मन में अच्छे विचार रखते हैं, तो हमारा जीवन खुशियों से भर जाता है और हम हर मुश्किल को आसानी से पार कर लेते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 45

दोहा:-

कबीर सुमिरण सार है , खोर सकल जंजाल।
खादि खति सय सोधिया , दूजा देस्यो काल।।

अर्थ:-

संत कबीर कहते हैं कि इस संसार में ईश्वर का स्मरण (सुमिरन) ही एकमात्र सत्य और तत्व है, इसके अलावा बाकी सभी सांसारिक वस्तुएं और मोह-माया केवल उलझन और जंजाल मात्र हैं। कबीर दास जी कहते हैं कि उन्होंने जीवन के हर पक्ष को गहराई से परख कर, छानबीन करके और उसे अच्छी तरह शोधकर यह निष्कर्ष निकाला है कि ईश्वर भक्ति के अलावा जो कुछ भी इस दुनिया में दिखाई देता है, वह सब नश्वर है और अंततः काल (मृत्यु) के गाल में समा जाने वाला है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से बच्चों को यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने जीवन में फालतू की बातों और दिखावे में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। जिस तरह सुमिरन को श्रेष्ठ बताया गया है, उसी तरह बच्चों के लिए उनकी पढ़ाई और अच्छे संस्कार ही सबसे बड़ा 'सुमिरन' हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि बुरी आदतें और अनुशासनहीनता केवल 'जंजाल' की तरह हैं जो अंत मेंन नुकसान ही पहुँचाती हैं। इसलिए, हमेशा नेक काम करें और अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाएं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 46

दोहा:-

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूँ।
बारी फेरी बलि गई, जित देखूँ तित तूँ॥

अर्थ:-

कबीर दास जी कहते हैं कि "हे ईश्वर! निरंतर आपका नाम जपते - जपते और आपका स्मरण करते-करते अब मेरा अस्तित्व आपके स्वरूप में ही विलीन हो गया है। मेरे भीतर का अहंकार ('हूँ' या 'मैं' की भावना) पूरी तरह समाप्त हो गया है। अब मुझमें मेरा कुछ भी शेष नहीं बचा है, मैं पूरी तरह आप पर न्योछावर (वारी-फेरी) हो गया हूँ। अब आलम यह है कि मैं जिधर भी देखता हूँ, मुझे हर कण में केवल आप ही दिखाई देते हैं।" सरल शब्दों में, जब मनुष्य के भीतर का 'स्वार्थ' और 'अहंकार' मिट जाता है, तो उसे पूरी सृष्टि में ईश्वर का वास नजर आने लगता है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से बच्चों को यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी अहंकार (घमंड) नहीं करना चाहिए। जब हम 'मैं' और 'मेरा' की भावना को छोड़कर दूसरों की मदद करते हैं और सबके प्रति प्रेम रखते हैं, तब हम एक बेहतर इंसान बनते हैं। यह हमें सिखाता है कि अच्छी बातों को अपनाने और अच्छे आदर्शों पर चलने से हमारा व्यक्तित्व इतना निखर जाता है कि हमारे अंदर की बुराइयां खत्म हो जाती हैं। जैसे कबीर को हर तरफ ईश्वर दिखे, वैसे ही हमें हर इंसान में अच्छाई देखनी चाहिए।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 47

दोहा:-

कबीर निरभै रामजपि, जय लग दीवै वाति ।
तेल घट्या बाती बुझी, (तय) सोवेगा दिन राति॥

अर्थ:-

संत कबीरदास जी कहते हैं कि हे मनुष्य! जब तक तेरे शरीर रूपी दीपक में प्राणों की बाती और आयु का तेल मौजूद है, तब तक तू निडर होकर ईश्वर (राम) का स्मरण कर ले और अच्छे कर्म कर ले। जिस दिन तेरी आयु का तेल खत्म हो जाएगा और प्राणों की ज्योति बुझ जाएगी (अर्थात मृत्यु हो जाएगी), तब तुझे अनंत काल के लिए गहरी नींद में सोना होगा। तब चाहकर भी तू कुछ नहीं कर पाएगा, इसलिए समय रहते जीवन को सफल बना ले।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

प्यारे बच्चों, इस दोहे का मतलब है कि "समय बहुत कीमती है।" जैसे एक दीया तभी तक जलता है जब तक उसमें तेल होता है, वैसे ही हमारे पास भी काम करने के लिए एक निश्चित समय है। हमें अपने कीमती समय को आलस में बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमें आज ही अच्छी बातें सीखनी चाहिए, बड़ों का आदर करना चाहिए और मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए, ताकि हम बड़े होकर अच्छे इंसान बन सकें।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 48

दोहा:-

दीपक पावक आँखिया, तेल भी आँण्या संग।
तीन्यूँ मिल करि जोइया, उड़ि उड़ि पड़े पतंग॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीरदास जी ने ज्ञान की साधना का सुंदर चित्रण किया है। वे कहते हैं कि मैंने अपने शरीर रूपी दीपक में ईश्वरीय प्रेम का तेल डाल दिया है और उसमें ज्ञान की लौ (आँखिया/दृष्टि) प्रज्वलित कर दी है। जब ज्ञान, प्रेम और साधना की ये तीनों शक्तियाँ एक साथ मिलती हैं, तो ऐसी तीव्र ज्योति उत्पन्न होती है कि विषय - वासनाओं और मोह-माया के रूपी 'पतंगे' उस दिव्य प्रकाश की ओर आकर्षित होकर स्वयं जलकर भस्म हो जाते हैं। सरल शब्दों में, जब मनुष्य के भीतर सच्चा ज्ञान और प्रेम जागृत होता है, तो उसके मन की सारी बुराइयाँ और सांसारिक भटकाव अपने आप समाप्त हो जाते हैं।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि सच्ची लगन और सही ज्ञान में बहुत बड़ी शक्ति होती है। जैसे एक दीपक अंधेरे को दूर कर देता है, वैसे ही अच्छी शिक्षा और अच्छे विचार हमारे मन के डर और बुराइयों को खत्म कर देते हैं। यदि आप प्रेम और मेहनत के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे, तो दुनिया की कोई भी बाधा (बुरी आदतें या ध्यान भटकाने वाली चीजें) आपको रोक नहीं पाएगी। हमेशा अपनी बुद्धि और दिल को अच्छाई की रोशनी से भरे रखें ताकि आप सही रास्ते पर चल सकें।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 49

दोहा:-

हिरदा भीतरि दौं बलैं, धूवाँ न प्रकट होइ।
जाकै लागी सो लखै, कै जिहि लाई सोइ॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर जी कहते हैं कि मन के भीतर विरह या दुःख की अग्नि जल रही है, लेकिन उसका धुआं बाहर दिखाई नहीं देता। यानी किसी व्यक्ति के मन की पीड़ा या मानसिक कष्ट बाहर से नजर नहीं आता। इस पीड़ा को या तो वह व्यक्ति समझ सकता है जिसके हृदय में यह दर्द उठ रहा है, या फिर वह ईश्वर (परमात्मा) जान सकता है जिसने यह प्रेम या विरह की अग्नि प्रज्वलित की है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें किसी भी व्यक्ति के बाहरी व्यवहार को देखकर उसके बारे में कोई राय नहीं बनानी चाहिए। कई बार लोग ऊपर से शांत दिखते हैं, लेकिन उनके मन में बहुत बड़ी परेशानी या दुःख हो सकता है। इसलिए, हमें सबके प्रति दयालु और संवेदनशील होना चाहिए। हमें दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि हम नहीं जानते कि कोई व्यक्ति अपने अंदर किस तरह के संघर्ष से जूझ रहा है।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

मिशन शिक्षण संवाद

अमृतवाणी संदेश

अंक- 50

दोहा:-

भल ऊठी भोली जली, खपरा फूटिम फूटि ।
योगी था सो रमि गया,आसणि रही विभूति॥

अर्थ:-

इस दोहे में कबीर दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार सुबह होने पर आग बुझ जाती है और केवल खप्पर (बर्तन) के टुकड़े ही शेष रह जाते हैं, ठीक उसी प्रकार यह जीवन भी क्षणभंगुर है। जब मृत्यु आती है, तो शरीर रूपी मिट्टी का पात्र टूटकर बिखर जाता है। जो योगी (जीवात्मा) इस शरीर में निवास कर रहा था, वह परमात्मा में लीन हो जाता है और पीछे केवल शरीर की राख (विभूति) ही बची रह जाती है। कबीर समझाना चाहते हैं कि यह संसार और हमारा शरीर स्थायी नहीं है, इसलिए मोह-माया में पड़ने के बजाय सत्य को समझना आवश्यक है।

बच्चों के लिए नैतिक संदेश

बच्चों, इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपनी सुंदर वस्तुओं, खिलौनों या शरीर पर कभी अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि समय के साथ सब कुछ बदल जाता है।जिस तरह पुरानी चीजें टूट जाती हैं,वैसे ही घमंड भी एक दिन टूट जाता है। हमें बाहरी सुंदरता के बजाय अपने अच्छे गुणों और व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि हमारे जाने के बाद लोग हमारे शरीर को नहीं, बल्कि हमारे द्वारा किए गए अच्छे कार्यों और हमारे स्वभाव को ही याद रखते हैं।

टीम अमृतवाणी संदेश
मिशन शिक्षण संवाद

shikshansambad@gmail.cm 9458278429 https://www.missionshikshansambad.com
https://www.shikshansambad.blogspost.in https://www.facebook.com/shikshansambad/

Scanned with OKEN Scanner

टीम अमृतवाणी संदेश

श्री मिहिर यादव
कम्पोजिट विद्यालय कुकुहाँ
ब्लाक - करंजाकला, जनपद - जौनपुर

नरेन्द्र नाथ पटेल
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन
ब्लाक - भदोही, जनपद - भदोही

श्री रविन्द्र कुमार पटेल
पी एम श्री उच्च प्रा. वि. झौवा
ब्लाक - औराई, जनपद - भदोही

मिशन शिक्षण संवाद

Scanned with OKEN Scanner